

पद १६९

(रागः ललित - तालः ध्रुपद)

तू है तू परशिव परब्रह्म निर्विकार ॥ध्रु.॥ सत्यरूप सत्य बीज
एकाकी सकल विश्वाधार। अभोग शिव जीव विद्या अविद्या
पंचभूत परम पुरुष निगम अगोचर मानिक नाम चिदानंद शाश्वत
अखिलाधार ॥१॥